मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एजुकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर–305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

Swami Vivekanand Mahila Mahavidhyalaya, Roopangarh

Rai Ka Bagh, Parbatsar Road, Roopangarh, Ajmer-305814

www.svmmcollege.in

3.3.1.1 Links to the papers published in journals listed in UGC CARE list

प्राचार्या
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रुपनगढ (अजमेर) राज.

KOMAL PAREEK

Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:01:18 +05'30'

3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC CARE list during the last five years

Title of paper	Name of the author/s	Department of the teacher	Name of Journal	Calendar Year of publication	ISSN number	Link to the recognition in UGC enlistment of the Journal /Digital Object		
						Link to website of the Journal	Link to article / paper / abstract of the article	Is it listed in UGC Care list
Social background of leadership in local government	Dr. Komal Pareek	Political Science	Journal of Modern Management & Entrepreneurship(JMME)	2017-18	2231-167X	https://www.inspirajournals.com/JMME	https://www.inspirajournals.com/home/viewdetails/?id=732	
Evaluating leadership in local government	Dr. Komal Pareek	Political Science	Journal of Commerce, Economics & Computer Science(JCECS)	2017-18	2395-7069	https://www.inspirajournals.com/JCECS	https://www.inspirajournals.com/Issues/Previous-Issue-JCECS/24/27	
A Research on the Differences between india's Rural and Urban Demographic characteristics.	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	AIRO JOURNALS Multidisciplinary International	2020-21	2320-3714	https://www.airo.co.in/view-publication/1854	https://www.airo.co.in/view-publication/1854	
Review of rainfall and groundwater analysis for reliability of agriculture based on land potential and development.	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	AIRO JOURNALS Multidisciplinary International	2020-21	809-827	https://www.airo.co.in/view-publication/1854	https://www.airo.co.in/view-publication/1854	
A research based study on population growth and future resource planning in Bharatpur district.	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	ALOCHANA UGC-CARE Listed Group-1	2020-21	2231-6329			

KOMAL PAREEK Digitally signed by KOMAL PAREEK Date: 2024.04.30 14:01:45 +05'30'

प्राचार्या
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

Saltantkaleen bharat me nagro ka jivan utthan evm sanrachna	Mr. Shahiad khan	History	Vidhyavarta	2021-22	2319-9318	www.vidyawarta.com		
Population growth and resource assessment in Bharatpur district	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	Shodhasamhita UGC Care Group 1 Journal	2021-22	2277-7067			
Crisis of Groundwater Storage and Influence of Agricultural Practices of Paschim Medinipur In West Bengal	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	UGC Care Group 1 Journal	2022-23	0974-8946			
Environmental Issues Arising From Urbanization in Special Reference of some locations of west bengal	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	UGC Care Group 1 Journal	2022-23	0974-8946			
Charting Horizons: a Comprehensive Case Study On The Pivotal Factors Driving International Migration Among Kerala's Student Community	Dr. Hemraj Bairwa	Geography	UGC CARE, Peer Reviewed and Refereed Journal	2022-23	0937-0037			
Munshi Premchand satire in Hindi Literature	Miss. Vijay Laxmi Kumawat	Hindi	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2022-23	2582-6557			RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-04 Volume-12 December 2023
Munshi Premchand satire in Hindi Literature	Mrs. Radhe Rani Tiwari	Hindi	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2022-23	2582-6557			RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-04 Volume-12 December 2023
Bhagwat geeta: The rellvence of yoga in Current Reference	Dr. Shweta Sharma & Mrs. Savita Sharma	History	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2023-24	2582-6557			RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-05 Volume-01 January 2024
Shri Madbhagat puran: chief interkathaye	Miss. Vijay Laxmi Kumawat	Hindi	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2023-24	2582-6557			RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-05 Volume-01 January 2024
Informatics is a research study in the context of current circumstances.	Sunita Choudhary	Liberary Science	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2023-24	2582-6557			RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-05 Volume-01 January 2024
Sovereignty of nation states Impact of globalization	Miss. Farah	Political Science	JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL	2023-24	2582-6557			RNI NO-MP/BIL.2020/78687 Year-05 Volume-01 January 2024

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:02:07 +05'30'

Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231-167X, Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 02, April, 2017, pp. 351-356

स्थानीय शासन में नेतृत्व की सामाजिक पृष्ठभूमि

कोमल पारीक*

स्थानीय शासन का वर्तमान युग में आमजन के लिए अत्यन्त महत्व हैं क्योंकि यह प्रजातंत्र की आधार शिला भी है। स्थानीय शासन सबसे महत्वपूर्ण है फिर भी ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही अंगों में हम ये नहीं कह सकते कि भारत में स्थानीय सरकारें सक्रिय क्रियाशील दक्ष एवं पूर्णतया निपुण है। भारत के संविधान में हुए 73 वें व 74 वें संशोधन से स्थानीय शासन की संस्थाओं की प्रकृति में आए इस परिवर्तन से लोकतंत्र को धरातल के आम आदमी तक पहुँचाने में मदद मिल रही है।

किसी भी देश का स्थानीय शासन प्रायः दो इकाईयों में विभाजित है– नगरीय एवं ग्रामीण। नगरीय क्षेत्रों में निवास करने वाली जनता की स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने का दायित्व नगरीय निकाय (नगर निगम, नगर परिषद एवं नगरपालिका) का होता हैं इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली जनता की स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने का दायित्व पंचायती राज की त्रिस्तरीय रचना (जिला परिषद, पंचायत समिति एवं ग्राम पंचायत) द्वारा वहन किया जाता है।

प्रस्तुत आलेख में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है कि नगरीय एवं ग्रामीण नेतृत्वकर्ताओं की सामाजिक पृष्टभूमि कैसी है उनमें क्या अन्तर हैं दोनों ही इकाईयों के नेतृत्व में क्या तथ्य उभरकर सामने आये है। जाति, धर्म, आयु व्यवसाय, एवं शिक्षा में दोनों इकाईयों में क्या अन्तर स्पष्ट होता है इसके लिए शोधार्थी ने एक नगरपरिषद (किशनगढ) एवं 4–5 ग्राम पंचायतों का सर्वेक्षण किया एवं प्रतिनिधियों से कतिपय प्रश्न किए जिसका सर्वेक्षण प्रतिवेदन निम्नानुसार इस आलेख में प्रस्तुत किया जा रहा है:–

1. जेन्डर और क्षैत्र के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्षेत्रीय प्रकृति		क्षेत्रीय प्रकृति		योग
		शहरी	ग्रामीण	
जेन्ड़र	पुरुष	28	23	51
		54.9%	45.1%	100.0%
		70.0%	57.5%	63.8%
	महिला	12	17	29
		41.4%	58.6%	100.0%
		30.0%	42.5%	36.3%
योग		40	40	80
		50.0%	50.0%	100.0%
		100.0%	100.0%	100.0%

शोध चूंकि स्थानीय शासन के दोनों ही स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन है अतः तालिका दर्शाति है कि शोध के दौरान कुल 80 उत्तरदाताओं (जनप्रतिनिधियों) पर अध्ययन किया गया इनमें 63.8 प्रतिशत पुरूष उत्तरदाता थे जबकि

* शोधार्थी, पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

KOMAL PAREEK Digitally signed by KOMAL PAREEK Date: 2024.04.30 14:02:21 +05'30'

Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
ISSN : 2395-7069 (Impact Factor : 2.0546) Volume 03, No. 01, January - March, 2017, pp. 317-322

स्थानीय शासन में नेतृत्व का मूल्यांकन

कोमल पारीक*

वर्तमान प्रजातांत्रिक व्यवस्था में जनता और सरकार के मध्य की कडी के रूप में जन प्रतिनिधि अपना स्थान रखते है। जन प्रतिनिधि ही जन इच्छाओं एवं आकांशाओं को अभिव्यक्त करने और उन्हे पूरा करने का माध्यम है। अतः इन जन प्रतिनिधियों के कंधों पर व्यापक जिम्मेदारियां है। इन उत्तरदायित्वों का सुचारू रूप से संचालन करना इन प्रतिनिधियों का परम कर्तव्य होता है। आम जन इन्हीं जन प्रतिनिधियों पर निर्भर रहकर ही अपनी बात को सरकार तक पहुँचाने का कार्य करते है। इनकी योग्यता एवं कार्यक्षमता पर ही नागरिकों एवं राज्य का विकास निर्भर करता है। अतः इन नेतृत्व कर्ताओं की अपने कार्य क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी आवश्यक है इसी विचार के तहत इस आलेख में शहरी एवं ग्रामीण जन प्रतिनिधियों की भागीदारी का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

इस आलेख को अधिक सारगर्भित बनाने के लिए नेतृत्व की (जनप्रतिनिधियों) राजनीतिक पृष्ठभूमि एवं जन प्रतिनिधि किस दल का सदस्य है, स्थानीय नियमों से संबंधित जानकारी एवं चुनाव लड़ने की प्रेरणा कैसे मिली आदि। ऐसी ही विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान व इनको आकलन करने का प्रयास किया गया है। क्योंकि जब नींव मजबूत होगी तब ही उस पर खड़े भवन की मजबूती का अनुमान लगाया जा सकता है।

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि जनप्रतिनिधियों में पुरूष ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी बढ–चढकर भाग लिया है। साथ ही यह भी आकलन किया गया है कि जनप्रतिनिधियों में नगरीय तथा ग्रामीण दोनों ही प्रकार की शासन व्यवस्था में शिक्षा के स्तर को मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है। इस नेतृत्व के मूल्यांकन के लिये शोधार्थी ने एक नगर परिषद, नगरीय शासन के लिये तथा ग्रामीण शासन के लिये विभिन्न ग्राम पंचायतों का सर्वेक्षण किया, इस सर्वेक्षण के तथ्य निम्नानुसार है:–

1. जेन्डर, क्षेत्र और राजनीतिक दल की सदस्यता के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्षेत्रीय प्रकृति			किसी राजनीतिक दल के सदस्य है ?			योग
			हाँ	नहीं	कह नहीं सकते	
शहरी	जेन्ड़र	पुरुष शहरी	28	0	0	28
			100.0%	0%	0%	100.0%
			70.0%	0%	0%	70.0%
		महिला	12	0	0	12
			100.0%	0%	0%	100.0%
			30.0%	0%	0%	30.0%
	योग		40	0	0	40
			100.0%	0%	0%	100.0%
			100.0%	0%	0%	100.0%
ग्रामीण	जेन्ड़र	पुरुष	13	8	2	23
			56.5%	34.8%	8.7%	100.0%
			68.4%	42.1%	100.0%	57.5%
		महिला	6	11	0	17
			35.3%	64.7%	0%	100.0%
			31.6%	57.9%	0%	42.5%
	योग		19	19	2	40

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, पेसिफिक विश्वविद्यालय उदयपुर, राजस्थान।

KOMAL PAREEK Digitally signed by KOMAL PAREEK Date: 2024.04.30 14:02:36 +05'30'

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN 2320-3714
Volume 3 Issue 3
September 2021
Impact Factor 10.1
Subject Geography

भूमि क्षमता और फसल के आधार पर कृषि की विश्वसनीयता के लिए वर्षा और भूजल विश्लेषण की समीक्षा

मनमोहन मीना
रिसर्च स्कॉलर
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर
डॉ. हेमराज बैरवा
प्रोफेसर एंड गाइड
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER.IFANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, ISHALL BELEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

अमूर्त- कृषि की विश्वसनीयता के लिए वर्षा और भूजल विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कारक हैं। ये विश्लेषण भूमि क्षमता और फसल उत्पादन को समझने में मदद करते हैं और कृषि नियोजन और प्रबंधन के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। वर्षा विश्लेषण में, वर्षा की मात्रा, वर्षा के समयगत विभाजन, मौसमी बदलाव, वर्षा के आधार पर पानी की उपलब्धता, भूमि की सतह पर पानी की निकासी और संचयन, और उचित वर्षा के लिए उचित समय की माप और मूल्यांकन किए जाते हैं। भूजल विश्लेषण में, भूजल स्तर, भूजल की उपलब्धता, भूमि की पानी की संचयन और निकासी की गतिशीलता, भूमि की पानी की आपूर्ति की उपयोगिता, जल स्रोतों की प्रबंधन और उपयोगिता, भूमि की सुरक्षा और संरक्षण के माप और मूल्यांकन किए जाते हैं। इन विश्लेषणों के माध्यम से, कृषि के लिए वर्षा और भूजल की विश्लेषण समय-सामग्री को व्यावहारिक ढंग से

KOMAL PAREEK Digitally signed by KOMAL PAREEK Date: 2024.04.30 14:02:54 +05'30'

आलोचना
त्रैमासिक
ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

भरतपुर जिले में जनसंख्या वृद्वि और भावी संसाधनों का नियोजन–एक शोधपरक अध्ययन

डॉ.हेमराज बैरवा

प्रोफेसर, भूगोल विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

जितेन्द्र सिंह चौधरी

शोधार्थी –भूगोल विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

ईमेलः jitendrachoudhary567@gmail.com

प्रस्तावनाः

मध्यकाल में भरतपुर का विकास सरकूलर रोड़ के अन्दर परकोटे तक ही सीमित था। समय के साथ–साथ नगर के स्वरूप में भी परिवर्तन होने लगा एवं शहर का विस्तार बाहर के दरवाजों एवं चारदीवारी से बाहर होने लगा। राष्ट्रीय राजमार्ग एवं रेलवे लाईन के विकास के फलस्वरूप शहर के विकास तथा आर्थिक क्रियाकलापों में वृद्धि होने लगी।

शहर में आसपास में आमोद–प्रमोद, आवासीय, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं पर अधिक दबाव होने से शहर का विकास सरकूलर रोड़ से बाहर अनियंत्रित रूप से होने लगा। उपरोक्त समस्याओं के परिणाम स्वरूप भरतपुर आवासीय, पर्यावरण, ड्रेनेज, यातायात आदि की दृष्टि से अपनी मौलिकता खोता गया तथा अत्यधिक भीड–भाड़ का केन्द्र बन गया। उपरोक्त समस्याओं के निराकरण हेतु शहर के सुनियोजित विकास के लिए दीर्घ कालीन मास्टर प्लान बनाया जाना आवश्यक है।

नियोजन का आधार

भरतपुर शहर का मास्टर प्लान वर्ष 2001–2023 बनाने के लिए विभिन्न विभागों से आंकड़ों का संकलन कर एवं विद्यमान भू–उपयोग का सर्वेक्षण उपरान्त उनका अध्ययन एवं विश्लेषण किया

KOMAL PAREEK Digitally signed by KOMAL PAREEK Date: 2024.04.30 14:03:10 +05'30'

SHODHASAMHITA
शोधसंहिता

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

भरतपुर जिले में जनसंख्या वृद्वि और संसाधनों का मूल्यांकन

डॉ.हेमराज बैरवा
प्रोफेसर, भूगोल विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

जितेन्द्र सिंह चौधरी
शोधार्थी –भूगोल विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
ईमेलः jitendrachoudhary567@gmail.com

प्रस्तावनाः

भरतपुर, राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शहर है। यह $27^0 13'$ उत्तरी अक्षांश एवं $77^0 33'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह भरतपुर जिले व नवनिर्मित संभाग का भी मुख्यालय हैं। आगरा–जयपुर–बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–11, दिल्ली–मुम्बई विद्युतीकृत ब्रॉडगेज रेलवे लाईन से जुड़ा हुआ है।

प्राकृतिक वन्य जीवन व वनस्पति सम्पादा से परिपूर्ण विश्व विख्यात केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (घना पक्षी विहार) तथा स्वर्णिम पर्यटन त्रिकोण पर स्थित होने के कारण यह शहर पर्यटन का प्रमुख केन्द्र है। भरतपुर शहर के परिचय–प्रदेश ;भ्पदजमतसंदकद्ध की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। 2001 की जनगणना के अनुसार शहर की जनसंख्या 2,05,235 हैं शहर के विकास हेतु आवश्यक आधारभूत वह जनसुविधाओं की कमी से इस शहर व परिचय प्रदेश ;भ्पदजमतसंदकद्ध का अधिक विकास नहीं हो पाया है।

क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्यः

राजस्थान पूर्वी राजस्थान का एक महत्वपूर्ण शहर है। इसे राजस्थान का पूर्वी सिंह द्वार भी कहां जाता है। भरतपुर जिला मुख्यालय होने के साथ–साथ नव निर्मित भरतपुर सम्भाग का मुख्यालय भी है। जिले की उत्तरी एवं पूर्वी सीमा पर क्रमशः उत्तर में हरियाणा का गुडगांव तथा पूर्व में उत्तर प्रदेश के मथुरा व आगरा जिले, दक्षिण में राजस्थान का धौलपुर जिला तथा दक्षिण पश्चिम में करौली व दौसा, पश्चिम में दौसा एवं उत्तर पश्चिम में अलवर जिला स्थित है।

भारत शहर दिल्ली–आगरा स्वर्ण पर्यटन त्रिकोण पर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से 177 किलोमीटर, राज्य की राजधानी जयपुर से 178 किलोमीटर, श्री कृष्ण की जन्मस्थली मथुरा से 36 किलोमीटर तथा ताजमहल हेतु विश्व विख्यात आगरा शहर से 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भरतपुर,

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:03:24 +05'30'

का जिक्र कई श्लोकों में है। एक ऋग्वेदिक श्लोक कहता है। 'खेती पर सिद्धि हासिल करके हम फल—फूल सकते हैं, ईश्वर हमें जड़ी—बूटियों के जरिए पोषण प्रदान करे, ईश्वर करे कि हम भूमि पर हल जो सकें, खुषियों की बौछारों से भूमि पारजन्य (सिंचित) हो। वैदिक किसान मृदा उर्वरता बढ़ाने की तकनीक, तैत्तिरीय संहिता जानते थे, जिसे हम फसल चक्रीकरण कहते हैं। भारतीय बांटनी के जनक रॉक्सबर्ग ने कहा था 'बुआई के तरीकों के लिए पश्चिम भारत का ऋणी है। न्यूयार्क में कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. ड्रयू रैमसे तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नायडू ने कई तरह के पौधों एवं सब्जियों वाले, फलों वालों पेड़ों में पाया कि इनका एक कम्बीनेशन डिप्रेशन, एंग्जायटी को दूर करते हैं। हरी पत्तेदार सब्जियाँ पालक में पोषक तत्वा की बहुतायत होती है। बीन्स औरनट्स, हल्दी और काली मिर्च, दालचीनी, केसर में जबरदस्त रोग प्रतिरोधक तत्व मौजूद रहते है। साबूदाना कार्बोहाईड्रेट का मुख्य स्त्रोत है। यह एनर्जी से लबालब रहता है। पचने में भी आसान होता है। यह इस्ट्रेंट एनर्जी प्रदान करता है। प्रोटीन भी मिलता है। पबमेड सैंट्रल में प्रकाषित विभिन्न षोधों के अनुसार प्राटिन न केवल आपके मेटाबोलिक रेट को बढ़ाता है। बल्कि भूख को भी कम करता है। डेविस यूनिवर्सिटी के चांसलर गैरी के अनुसार यूनिवर्सिटी के प्लांट जेनेटिस्ट रिचर्ड मिशेलमोर ने यूनिवर्सिटी से कहा है कि पौधों के डीएनए पहचाने वाली मशीन को कोरोना वायरस टैस्टिंग मशीन में बदलकर कोरोना वायरस की रोकथाम में मदद कर सकते है।

REFERENCES:

१. कोहली दीपक, सक्सेस मिरर, आगरा, फरवरी २०१७, पेज ३५
२. द्विवेदी बालेन्दुशेखर, महा मीडिया, भोपाल, मार्च २०१७, पेज ४८
३. शर्मा के जी, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १० जनवरी २०२२
४. भास्कर न्यूज, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १२ जनवरी २०२२
५. भास्कर न्यूज, दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १४ फरवरी २०२२
६. रघुरामन, एन. दैनिक भास्कर, रेवाड़ी (हरियाणा) १ फरवरी २०२२

36

सल्तनतकालीन भारत में नगरों का जीवन, उत्थान एवं संरचना

शाहिद खान
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)

डॉ. दिनेश माडोत
शोध निदेशक, इतिहास विभाग,
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)

(ABSTRACT) सार :

प्राचीन काल में भी नगर व्यवस्था थी। व्यास ने महाभारत में लिखा है कि राजधानी को सुरक्षित रखने के लिये उसका एक दीवार या पहाड़ी से घिरा रहना आवश्यक है। कौटिल्य ने भी अर्थशास्त्र में शहर की परिधि आयताकार होना बताई ताकि सम्पूर्ण शहर सड़कों द्वारा मोहल्लों में विभाजित किया जा सके। उत्तरी भारत में दिल्ली सल्तनत की १३वीं शताब्दी के प्रारम्भ में स्थापना हुई उस समय तीर्थ स्थानों वाले प्राचीन नगर राजधानियों तथा अनेक ऐसे नगर थे जो कि प्रशासनिक व व्यापारिक केन्द्र थे। शहरीकरण सल्तनतकाल की एक प्रमुख विशेषता थी। दिल्ली सल्तनत की स्थापना भारतवर्ष के राजनीतिक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। क्योंकि शहरों का उद्भव आर्थिक, धार्मिक एवं प्रशासनिक कारणों से हुआ, इसलिए तुर्क आक्रमणकारियों के भारत आगमन से अनेक परिवर्तन हुए। फलस्वरूप नई—नई विचारधाराएँ आई और प्रशासनिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में भी बदलाव शुरू हुए। मुहम्मद हबीब के मतानुसार ''तुर्को ने पहले से चले आ रहे आर्थिक संगठन से कहीं अधिक श्रेष्ठ आर्थिक संगठन का निर्माण किया और इसके कारण नगरों अथवा शहरी केन्द्रों का विस्तार हुआ। इस काल में शहरों की संख्या में वृद्धि

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:03:37 +05'30'

ISSN-0970-9045

KERALA'S MIGRANT WORKFORCE: A CASE STUDY OF PRE- AND POST-COVID MIGRATION TRENDS

Dr. Hemraj Bairwa
Asst Prof. Department of Geography, University of Technology, Jaipur, Rajasthan

Mr Ashif K.P
Academic Head, Farook College P.M Institute of Civil Services Examinations, Farook College, Kozhicode.
Research Scholar, University of Technology, Rajasthan

Abstract

This comprehensive case study delves deeper into the dynamics of labour migration to Kerala, with a specific focus on the pre-COVID (January 2020) and post-COVID (June 2022) periods. Grounded in extensive interviews with accommodation providers for migrant labourers in Pattambi, Palakkad District, Kerala, during both periods, the research offers invaluable insights into labour migration within India. It explores migration patterns, states of origin, socio-economic implications for both migrants and the local community, and the influence of cultural factors. This study provides a detailed analysis of the continuity and intensity of labour migration, state-wise trends, settlement patterns, business ventures, economic support systems, cultural integration, food preferences, wage disparities, and the impact of the COVID-19 pandemic on migration dynamics in Kerala.

Introduction

Interstate labour migration has significantly shaped the labour dynamics in Kerala since as early as 1950s (Kumar, 2016). From 1961 to 1991, labourers from neighbouring states, particularly Tamil Nadu and Karnataka, were pivotal in supplementing the native workforce, predominantly in blue-collar occupations (Kumar, 2016). Their activities encompassed plantation work and brick kilns, with Karnataka workers concentrated in districts like Wayanad, Kannur, and Kasaragod, while Tamil Nadu workers were distributed across all districts. Notably, until 2011, states such as Tamil Nadu, Karnataka, and Maharashtra were the primary source states for migrant labour (Parida & Raviraman, 2021). However, migration trends have shifted in recent times, with states like West Bengal, Assam, Odisha, and Bihar emerging as substantial contributors to Kerala's guest workforce. Presently, Kerala is a magnet for migrant workers, constituting roughly 10% of its total population, with over 31.5 lakh domestic migrant workers (Parida & Raviraman, 2021), making every twelfth person in Kerala an interstate migrant worker.

The drivers behind interstate labour migration to Kerala are multifaceted, encompassing landlessness, water scarcity for agriculture, low income from farming, lower wages, seasonal employment opportunities in home states, debts, the appeal of urban life, sustained employment prospects, limited hostility from host communities, and a shortage of local workers. A key factor is the substantial wage differential. In 2018, the average national daily wage for a male agricultural labourer was ₹321, while in Kerala, it was significantly higher at ₹767. In contrast, daily wage workers in states like Gujarat earned only ₹265, in Tripura ₹270, West Bengal ₹329, Uttar Pradesh ₹247, and Odisha ₹250 (Surabhi & Kumar, 2007). Economic disparities, coupled with factors like water scarcity, debt, and better employment opportunities, are the driving forces

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:03:53 +05'30'

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

RABINDRA BHARATI PATRIKA
ISSN : 0937-0037

CHARTING HORIZONS: A COMPREHENSIVE CASE STUDY ON THE PIVOTAL FACTORS DRIVING INTERNATIONAL MIGRATION AMONG KERALA'S STUDENT COMMUNITY

Dr. Hemraj Bairwa,
[illegible] Rajasthan

M. Ashif K P
Assistant Head, [illegible] Farook College, Kozhikode
[illegible] Scholar, [illegible] University of Technology, Rajasthan

Abstract

[illegible] prevalent global phenomenon [illegible] the socio-economic fabric of Kerala [illegible]. This paper offers a meticulous exploration of the pivotal factors driving international migration among Kerala's student community, utilizing data from the Kerala Migration Survey (KMS) 2018 [illegible] Malappuram districts [illegible] the challenges of social adaptation [illegible] influencing migration decisions among Kerala's students. This study [illegible] migration in Kerala but also [illegible] implications for educational reforms [illegible]. The identified factors necessitate a [illegible] of Kerala's education system to align with global standards, fostering an environment that [illegible] the aspirations and needs of the student community. As Kerala [illegible] this paper provides valuable insights for policymakers [illegible] of international [illegible]

Introduction

[illegible] has emerged as a pervasive phenomenon, exerting profound [illegible] landscapes (World Bank, 2020). Kerala, situated in southwestern [illegible] dynamics of migration, with distinctive patterns shaping its [illegible]. Historically, Kerala experienced a surge in migration to Gulf [illegible] opportunities and resulting in substantial remittances (International Organization for Migration, [illegible]). However, recent trends indicate a decline in labour migration, as evidenced by the Kerala Migration Survey (KMS) [illegible], marking a pivotal shift in migration dynamics (Centre for Development Studies, 2018). The KMS 2018 [illegible] decades of meticulous [illegible] the Centre for Development Studies (CDS), offers critical insights into migration patterns, demographic shifts, and economic impacts (CDS, 2018).

[illegible] emigration from Kerala [illegible]

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:04:07 +05'30'

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

ISSN-2582-6557
JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING & IMPACT FACTOR-5.2
RNI-MP/BIL/2020/78687
December-2023

"मुंशी प्रेमचंदः कथा साहित्य में व्यंग्य"

विजयलक्ष्मी कुमावत (सहायक आचार्य, हिंदी)
स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़।
राधे रानी तिवारी (रिसर्च स्कॉलर)

मुंशी प्रेमचंद साहित्यिक जगत में सबसे अधिक प्रसिद्ध कथाकार रहे हैं। जीवन की भयावहता और क्रूर विद्रूपता को जिस आक्रोश, प्रखरता, शालीनता और जिंदादिली के साथ उन्होंने अपने गद्य साहित्य में शब्दबद्ध किया है, उससे हिंदी गद्य में शिल्प और संवेदना दोनों ही धरातल पर व्यापक बदलाव आया है। निस्संदेह प्रेमचंद कलम के सिपाही थे। सर्वाधिक प्रासंगिक होने के कारण उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक हैं। मुंशी प्रेमचंद के सभी साहित्यिक रूपों में उनका कथाकार रूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनकी साहित्यिक प्रतिभा का चरम निदर्शन इसी रूप में हुआ है।

मुंशी प्रेमचंद ही ऐसे रचनाकार थे जो पूरी ईमानदारी और गंभीरता के साथ अपने समय के व्यापक यथार्थ को अभिव्यक्त कर रहे थे। उनकी रचनाओं के पात्र व्यंग्य के माध्यम से कुठाराघात करते दिखते हैं

प्रेमचंद के कथा साहित्य में सामाजिक स्थिति पर व्यंग्यः

प्रेमचंद अत्यंत प्रखर सामाजिक चेतना से संपन्न लेखक थे। उनका लक्ष्य सामाजिक सुधार था। इस उद्देश्य से प्रेरित होकर वे सड़ी-गली व्यवस्था, अंधविश्वास, रूढी, सामाजिक अत्याचार आदि की तीक्ष्ण आलोचना करते थे। प्रेमचंद के कथा साहित्य में समाज व्यवस्था पर व्यंग्य हैं, जिसके अंतर्गत मजदूर किसानों तथा दलितों की यथार्थपरक सामाजिक स्थिति का वास्तविक अंकन किया गया है। 'सेवा सदन' के अंतर्गत प्रेमचंद ने पाखंडी समाज के प्रच्छन्न वेश्या प्रेम पर तीखा व्यंग्य किया है--

"प्राचीन ऋषियों ने इंद्रियों को दमन करने के दो साधन बताएं हैं, एक राग, दूसरा वैराग्य।"

हमारी नागरिक समझ ने मुख्य स्थान पर मीना बाजार सजाकर राग मार्ग को ग्रहण किया। मिथ्या धार्मिक आडंबरों पर प्रेमचंद ने बड़ा ही तीखा व्यंग्य किया है। गोदान में जातिभ्रष्ट ब्राहमण के शुद्धिकरण का यह तरीका द्रष्टव्य है मातादीन को कई रुपए खर्च करने के बाद अंत में काशी के पंडितो ने फिर से ब्राहमण बना दिया । मातादीन को शुद्ध

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:04:23 +05'30'

ISSN-2582-6557 RNI-MP/BIL/2020/78687
JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY November-2023
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

सांस्कृतिक नायक : राम और हिंदी कविता

विजयलक्ष्मी कुमावत
सहायक आचार्य (हिंदी), स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़
राधे रानी तिवारी, रिसर्च स्कॉलर

प्रस्तावना

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है। जो उस समाज के सोचने विचारने कार्य करने के स्वरूप में अंतर्निहित होता है ।

संस्कृति शब्द 'कृ' धातु से बना है इसका अर्थ है 'करना'। संस्कृति का अर्थ किसी विशेष समाज और उसके विचारों रीति-रिवाजों और कला से संबंधित है। संस्कृति एक जीवंत समाज की जीवन धारा है जिसे हम अपनी कहानियां सुनाने, जश्न मनाने, अतीत को याद करने, अपना मनोरंजन करने और भविष्य की कल्पना करने के कई तरीकों से व्यक्त करते हैं।

नायक

आधुनिक संस्कृति में एक नायक को अक्सर ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। जिसकी साहस, निस्वार्थता और महान गुणो के लिए प्रशंसा की जाती है, और जो दूसरों की मदद करने या एक महान लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बलिदान करने को तैयार रहता है।

सांस्कृतिक नायक राम

राम नायक इसलिए नहीं है कि वह उत्तम जीवन जीते हैं, बल्कि इसलिए है, कि वह अद्भुत जीवन जीते हैं। कई हजार साल पहले जब दुनिया के अधिकांश हिस्सों में शासक केवल बर्बर और विजेता थे। वही राम ने मानवता, बलिदान और न्याय की एक अनुकरणीय भावना दिखाई थी।

राम की पूजा केवल इसलिए नहीं की जाती कि वह बाहरी दुनिया के विजेता है, वरन वह आंतरिक जीवन के भी विजेता है क्योंकि वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता है। अपने जीवन की सभी चुनौतियों के बावजूद व कभी अपना संतुलन नहीं खोते, कभी कड़वा या प्रतिशोधी नहीं बनते, वह छल एवम राजनीति से काफी हद तक दूर रहते हैं और अपनी शक्ति का दुरुपयोग न करने को लेकर सतर्क रहते हैं। समभाव की भावना रखने वाले व्यक्ति अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ता है। ईमानदारी और आत्म बलिदान का जीवन जीता है, अपनी प्रजा के लिए अपनी खुशी का त्याग करने को तैयार रहता है, और सबसे महत्वपूर्ण एक ऐसी संस्कृति को महत्व देता है। वह

KOMAL PAREEK Digitally signed by KOMAL PAREEK Date: 2024.04.30 14:04:41 +05'30'

ISSN-2582-6557 RNI-MP/BIL/2020/78687
JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY January-2024
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

भगवत गीता: वर्तमान परिपेक्ष्य में योग की प्रासंगिकता

डॉ श्वेता शर्मा (असिस्टेंट प्रोफेसर)
स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़ (अजमेर)
सविता शर्मा, शोधार्थी

प्रस्तावना

योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। शरीर और आत्म ज्ञान को एक रूप करने की प्रक्रिया ही योग कहलाता है। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि मन को शब्दों से मुक्त करके अपने आप को शांति और खालीपन से जोड़ने का एक तरीका है योग। योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना। योग शारीरिक व्यायाम, शारीरिक मुद्रा, ध्यान, सांस लेने की तकनीक और व्यायाम को जोड़ता है। इस शब्द का अर्थ ही 'योग' या भौतिक का स्वयं के भीतर आध्यात्मिक के साथ मिलन है। योग शब्द तथा इसकी प्रक्रिया और धारणा हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म में ध्यान प्रक्रिया से संबंधित है। हिंदू धर्म के ग्रंथ भगवद् गीता में योग का विस्तृत रूप से वर्णन हुआ है।

भगवत गीता के अनुसार योग के प्रकार

गीता के अनुसार योग का अर्थ है 'अप्राप्य की प्राप्ति'। योग हमारे कार्यों को शुद्ध करने के लिए है। योग मन को नियंत्रित करता है और परिणाम की अपेक्षा किए बिना निस्वार्थ कार्यों का मार्ग है। गीता में योग शब्द का एक नहीं बल्कि कई अर्थों में प्रयोग हुआ है, लेकिन हर योग अंततः ईश्वर के मिलने के मार्ग से ही जुड़ा हुआ है। गीता के अनुसार योग के कई प्रकार हैं। लेकिन मुख्यतः तीन प्रकार के योग का संबंध मनुष्य से अधिक होता है । यह तीन योग हैं कर्म योग, ज्ञान योग एवं भक्ति योग।

भागवत गीता के अनुसार ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग परम लक्ष्य की प्राप्ति के अत्यंत ही महत्वपूर्ण साधन है। मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार इन तीनों योग में से किसी भी एक योग को अपना कर तथा उसी के अनुरूप आचरण कर जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति अत्यंत ही सरल तथा सहज ढंग से कर सकता है। ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग तीनों ही योग एक दूसरे के सहयोगी है, विरोधी नहीं।

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:04:56 +05'30'

सूचना विज्ञान : एक शोधपरक अध्ययन (वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में)

सुनीता चौधरी

पुस्तकालय अध्यक्ष, स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय रूपनगढ़ (अजमेर)

परिचय:

इसमें कोई मतभेद नहीं है, कि सूचना विज्ञान की उत्पत्ति वैज्ञानिक पृष्ठभूमि में हुई है। विद्वानों में मतभेद का इस बात को है कि सूचना विज्ञान की प्रकृति, क्षेत्र एवं दूसरे शैक्षिक और व्यावसायिक क्षेत्रों के सम्बन्ध में है। उनकी शब्दावली को विषय एवं उसकी सीमा की महत्ता की वैधता एवं व्यावहारिकता से जुड़ा है, जो इसके व्यावहारिक जीवन में अधिक एवं योगदान द्वारा प्रमाणित है। यह एक वैज्ञानिक अवधारणा है जो कि अभिलेख ज्ञान के संकलन, परिचालन, वर्गीकरण, संग्रहण और प्रसार से जुड़ा हुआ है। सूचना विज्ञान एक अर्न्तविषयक प्रकृति का है, इसके विकास और क्षेत्र को एक अलग विषय के रूप में निश्चित नहीं किया जा सकता।

सूचना विज्ञान :

यद्यपि सूचना विज्ञान एक विषय के रूप में विज्ञान है, जिसमें "विज्ञान" शब्द एक प्रक्रिया के द्वारा विषय को सूचित नहीं करता है, जोकि सूचना की विशेषता एवं अनुप्रयोग से सम्बन्धित है। इण्टरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इन्फॉर्मेशन एण्ड लाइब्रेरी साइन्स के अनुसार "सूचना विज्ञान में वैज्ञानिक सूचना का प्रभुत्व मुख्यतः अर्थशास्त्र विषय की मांग आधारित तथ्यों के द्वारा निर्देशित किया गया था।" सूचना विज्ञान की वैज्ञानिक उत्पत्ति के बावजूद यह एक सामाजिक विज्ञान के विषय के रूप में जाना जाता है।

क्योंकि यह सूचना को एक साधन के रूप में मानता है। इसका उद्भव सूचना विज्ञान सर्वप्रथम 1950 के दशक के दौरान एक विषय के रूप में अस्तित्व में आया। सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग फराडने के द्वारा वर्ष 1955 में किया गया। जो कि एक विषय के रूप में एक लम्बे समय तक चले प्रलेखन आन्दोलन तथा उस पर पड़ने वाले सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी प्रभाव से हुआ। यह सत्य है कि सूचना विज्ञान शब्द की उत्पत्ति के समय से ही विभिन्न सूचना वैज्ञानिकों जैसे शेरीरो, बाउडेन एवं साविन्सन आदि के मध्य सूचना विज्ञान की प्रकृति के बारे में आपसी सहमति थी। मुख्यतः सूचना विज्ञान का सम्बन्ध वैज्ञानिक एवं तकनीकि सूचना के स्वरूप और सूचना के विज्ञान से था।

प्रारम्भ में स्पष्ट तौर पर सूचना विज्ञान की कोई निश्चित सकल्पना नहीं थी। सूचना विज्ञान में विभिन्न प्रकार की अवधारणाओं एवं परम्पराओं का अनुकरण होता है। उदाहरण के स्वरूप में-

- वस्तुगत अवधारणायें बनाम ज्ञानात्मक अवधारणायें।
- ग्रन्थालय परम्परा बनाम प्रलेखन परम्परा बनाम संगणन परम्परा।

उपर्युक्त अवधारणा के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं, जो विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों को निरूपित करते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के ज्ञान क्षेत्र विभिन्न सूचना क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते है। हालांकि इसके बावजूद, ये सभी संदर्भ रूप से एक ही नाम "सूचना विज्ञान" को प्रदर्शित करते है।

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय (अजमेर)

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:05:10 +05'30'

राष्ट्र राज्यों की संप्रभुता : वैश्वीकरण का प्रभाव

मिस फरहा (सहायक प्राध्यापक)
राजनीति विज्ञान
एस.बी.एस.एम. रूपनगढ़

सार

वैश्वीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें राजनीति, अर्थशास्त्र और संस्कृति जैसे सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलू शामिल हैं। समाजशास्त्र के प्रोफेसर रोलैंड रॉबर्टसन के अनुसार यह दुनिया की सबसे बड़ी [illegible] अंतर निर्भरता है जिसमें वैश्विक स्तर पर विचार, भाषा और सांस्कृतिक क्षेत्र का प्रसार शामिल है। यह किसी एक राज्य से संचालित नहीं अपितु कई व्यक्तित्व से बना है। दूसरी ओर संप्रभुता किसी भी राज्य के अपने भौगोलिक क्षेत्र पर विशेष अधिकार और नियंत्रण की शक्ति रखती है। [illegible] मैक्ग्रा इस [illegible] को इस रूप में परिभाषित करते हैं कि राज्य की सर्वोच्च राजनीतिक संस्थाएं अंतिम अधिकार रखती हैं और व्यक्ति व अन्य राजनीतिक अधिकारी उनके अधीन हैं। प्रस्तुत पत्र में राष्ट्र राज्यों की संप्रभुता पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शक्ति और राजनीतिक निर्णय से संबंधित है। यह स्वीकार्य है कि महत्वपूर्ण है कि वैश्वीकरण 18वीं शताब्दी में विद्यमान है, लेकिन [illegible] के दशक की उल्लेखनीय प्रगति के साथ, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इसमें महत्वपूर्ण गति आई। वैश्वीकरण में वस्तुएं, लोग और दर्शनों के [illegible] से संबंधित राष्ट्रीय सीमाओं का महत्व कम करना या यहाँ तक कि उनकी विशेषताएं भी शामिल हैं। हालांकि, राज्य के बीच यह एक सतत गति से आगे नहीं है और संचार प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण हाल के वर्षों में इसमें काफी तेजी आई है। इसके अलावा, 9/11 की घटनाओं के बाद से वैश्वीकरण के पीछे की प्रेरणाओं में उल्लेखनीय बदलाव [illegible] हैं। शक्तिशाली राष्ट्र-राज्य अपनी विचारधारा और संस्कृति के वैश्वीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं, जिसे [illegible] "अमेरिकीकरण" कहा जाता है, जो शिक्षा और राजनीतिक बहस करते हैं। इससे विश्व भर में सांस्कृतिक [illegible] और वैश्वीकरण के अन्य सिद्धांतों को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वैश्वीकरण विभिन्न रूपों में प्रकट हो सकता है, जिसमें वैश्विक उपभोक्ता, संस्कृति और व्यापार के प्रसार, साथ ही क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) का बढ़ता प्रभाव भी शामिल है। कुल मिलाकर, अध्ययन का उद्देश्य आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक [illegible] को शामिल करना है, जिसमें राष्ट्र-राज्यों की संप्रभुता पर वैश्वीकरण के प्रभाव की जांच करना है।

मुख्य शब्द : आर्थिक अंतर्निर्भरता, शक्ति [illegible], वैश्विक व्यापार, राष्ट्र राज्य, संप्रभुता

प्रस्तावना

वैश्वीकरण एक व्यापक अवधारणा है और यह एक व्यापक इतिहास वाला विषय है। वैश्वीकरण की कई अवधारणाएं हैं और कुछ की अलग-अलग परिभाषाएं बताई गई हैं। एक शब्दकोश इसे दुनिया भर में लोगों, ज्ञान, विचारधारा और धन की आबादी और वैश्विक अर्थव्यवस्था के व्यापक एकीकरण के रूप में परिभाषित करता है। एक अन्य परिभाषा बताती है कि यह एक ऐसी प्रणाली है जो द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में शुरू हुई और अब भी विकसित हो रही है। वैश्वीकरण की एक अन्य परिभाषा से पता चलता है कि वैश्वीकरण एक सार्वजनिक नीति है जो अमीरों को इस तरह से सुरक्षित करती है जिससे अमीरों को फायदा होता है या एक ऐसा तरीका है जो कभी-कभी अमीरों को [illegible] का लाभ उठाने के लिए [illegible] अनुमति देता है। लेकिन एक अन्य घटना भी है जिसे आम तौर पर आर्थिक वैश्वीकरण कहा जाता है। आर्थिक वैश्वीकरण का वैश्विक स्तर तक सभी मोर्चों पर वैश्विक आर्थिक असमानता के बारे में व्यापक धारणा है। वैश्वीकरण की [illegible], वैश्वीकरण की परिभाषा को सबसे अधिक बार उद्धृत किया गया है।

86-93

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय रूपनगढ़ (अजमेर)

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ़ (अजमेर) राज.

KOMAL PAREEK
Digitally signed by KOMAL PAREEK
Date: 2024.04.30 14:05:25 +05'30'